शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

रामचरितमानस पर आधारित चित्रों की पाण्डुलिपियाँ

- डॉ. कमल गिरि
पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रेमकुमारी श्रीवास्तव के शोध निबंध पर प्रकाशित पुस्तक 'काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ: रामचरितमानस' एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है। हमारे स्मारक जो आज भी हमारी संस्कृति और धर्म के एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं, ज्ञानवर्धक हैं। किन्तु मध्यकाल में मुस्लिम शासकों के आक्रमण से इनकी पर्याप्त क्षति हुई। ऐसे समय में धर्म और संस्कृति की रक्षार्थ पाण्डुलिपियाँ एक सशक्त और सुरक्षित माध्यम बनीं। जनसाधारण में इन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए विषय से संबंधित चित्रों का इनमें समावेश किया गया जो जनसाधारण के परिवारों, राजघरानों और ग्रन्थालयों या भंडारों में मुस्लिम आक्रमण से बचकर आज तक संरक्षित रह सकीं। इसका एक अच्छा उदाहरण जैन चित्रित पाण्डुलिपियाँ है जो धर्म के रक्षार्थ, प्रचारार्थ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकीं। चित्र एक ऐसा माध्यम है जो अपने द्वारा विषय की जानकारी सरलता से जनसाधारण तक पहुँचा देता है। उपरोक्त बात को ध्यान में रखते हुए मध्यकाल में व्यापारी वर्ग, संभ्रांत परिवार, हिन्दू राजाओं आदि सभी ने चित्रित पाण्डुलिपियों के निर्माण पर ध्यान दिया। परिणामस्वरूप चित्रकारों का इनको संरक्षण प्राप्त हुआ और एक बड़ी संख्या में चित्रित पाण्डुलिपियों का निर्माण हुआ। सचित्र ग्रंथों के केन्द्रों में गुजरात, बंगाल, अवध, उड़ीसा इत्यादि प्रमुख केन्द्र थे। जहाँ तक काशी का संबंध है, यहाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति देखने को मिलती है, चाहे धर्म-दर्शन हो, कला हो, वेशभूषा या खान-पान हो।

चित्रों की जब बात आती है तो विद्वानों का ध्यान काशी के मठों, मन्दिरों, गंगाघाट किनारे स्थित भवनों के साथ ही स्थानीय संग्रहालयों और निजी संग्रहों की ओर जाता है जो बनारस की चित्रकला के अद्वितीय उदाहरण अपने में समेटे हुए हैं। मठों, मन्दिरों, स्थानीय रईसों के भवन की दीवारें, जहाँ धर्म से संबंधित देवी देवताओं, लोकजीवन, संगीत, वनस्पति आदि का दर्शन कराती हैं वहीं सामान्य परिवारों में धर्म से संबंधित चित्रित पाण्डुलिपियों के दर्शन होते हैं। इन चित्रों में बनारस की अपनी विशेषताओं के साथ मुगल, राजस्थानी और कहीं-कहीं कम्पनी शैली का प्रभाव दिखाई देता है। कारण स्पष्ट है कि राजा-महाराजाओं एवं प्रमुखों के काशी आगमन के साथ उनके शिल्पियों का भी आगमन हुआ। इन शिल्पियों के साथ राजस्थानी, मुगल, कम्पनी चित्रशैलियों की विशिष्टताएँ भी स्थानीय चित्रों में समाहित हुईं। डॉ. प्रेमकुमारी श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक **'काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ: रामचरितमानस'** में इन बातों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। काशी में जिन चित्रित पाण्डुलिपियों की रचना हुई उनमें रामचरितमानस का विशेष स्थान है। संभवत: इसका कारण जनमानस में रामचरितमानस की लोकप्रियता है जिसे और रुचिकर बनाने के लिए तत्संबंधी चित्रों को पाण्डुलिपियों में चित्रित किया गया। इन पाण्डुलिपियों में कुछ राजसंरक्षण में चित्रित उदाहरण हैं और कुछ कुलीन वर्ग के संरक्षण में चित्रित उदाहरण। इन दोनों में शैली और अलंकारिकता की दृष्टि से अन्तर दिखाई देता है जो स्वाभाविक भी था। डॉ. श्रीवास्तव की प्रस्तुत पुस्तक काशी में चित्रित रामचरितमानस की पाण्डुलिपियों पर प्रकाश डालती है। सर्वविदित है कि ऐसी ज्ञानवर्धक पाण्डुलिपियों का अवलोकन करना एक कठिन कार्य है। इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक एक सफलतम विस्तारमय जानकारी प्रदान करती है। प्रत्येक रामचरितमानस की पाण्डुलिपि की अपनी अलग विशेषता का अवलोकन इस पुस्तक अध्ययन से किया जा सकता है। एक ही पाण्डुलिपि में कई चित्रकारों द्वारा कार्य करने का प्रमाण मिलता है तो बनारस के चित्रकारों के एक अलग वर्ग होने का प्रमाण है।

पुस्तक में काशी में चित्रित रामचरितमानस की विभिन्न संकलनों में संरक्षित पाण्डुलिपियों का उनकी विशेषताओं, रंगों और विषयों तथा अन्य विशिष्टताओं के साथ विस्तारमय अंकन किया गया है जो शोधकर्त्ताओं और विद्वानों के लिए महत्त्वपूर्ण है। रामचरितमानस के साथ ही लेखिका ने काशी से प्राप्त अन्य पाण्डुलिपियों, उदाहरणार्थ : दुर्गासप्तशती, गीतापंचरत्न, श्रीमद्भागवत इत्यादि का भी उल्लेख किया है, जिससे काशी में निर्मित पाण्डुलिपियों की जानकारी प्राप्त होती है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

शोध विषय-''**काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपि : रामचरितमानस** '' पर्यवेक्षक-डॉ0 रामकुँवर, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, उपाधिवर्ष 1987

पुस्तक - काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ : रामचरितमानस, कला प्रकाशन,न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच. यू., वाराणसी

मूल्य - रू0 370/-

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता : रूप और शिल्प

- प्रो० मोहन अवस्थी
पूर्वआचार्य, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. रेनू दीक्षित ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के रूप और शिल्प का सूक्ष्म अन्वेषण और अनुशीलन किया है। उक्त शोध प्रबन्ध में शोधार्थिनी ने प्रथमतः काव्य के रूप और शिल्प का व्यापक अध्ययन करते हुए यह लिखने का प्रयास किया है कि कविता में रूप और शिल्प उसके सौन्दर्य विधान का ऐसा पक्ष है, जिसकी परिणति छायावादोत्तर हिन्दी कविता में भी विद्यमान रही है। प्रबंध लेखिका का यह मानना है कि लय और छंदात्मकता कविता का अनिवार्य तत्व नहीं है, नयी कविता या साठोत्तरी कविता में तो शायद गद्य की लय ही उसकी लयात्मकता का स्थान लेती है। आचार्य महावरी प्रसाद द्विवेदी ने वर्ष और पोयेट्री को परिभाषित करते हुए अपने निबंध में यह प्रतिपादित किया था कि कविता केवल लयात्मकता से ही नहीं अपितु अपने रूप, शिल्प विधान एवं काव्यभाषा द्वारा पहचानी जानी चाहिए। इस तर्क की विवेचना करते हुए लेखिका ने प्रयोगवाद और नयी कविता के प्रमुख कृतिकारों की रचनाओं का अनुशीलन करते हुए यह कहा है कि कविता में भाषा ही नहीं शब्द भी बोलते हैं। यह क्षमता विद्वान और चिन्तक कवियों में है जो अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग करते हुए रचनात्मकता के माध्यम से अन्तर्जगत और बाह्यजगत के सम्बन्ध को शब्द चित्रों द्वारा स्थापित करते हैं।

नयी कविता के प्रमुख रचनाकारों ने परम्परागत शास्त्रीय प्रतिबद्धताओं को नकारते हुए यह कहा है कि आज की कविता ने प्रास के रजत पाश तोड़कर छंद के बंधनों से मुक्ति प्राप्त करते हुए ऐसे सार्थक प्रयोग किये हैं कि उनमें विद्यमान स्वच्छंदतावाद, नकेनवाद आदि प्रवृत्तिगत विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ और भी है जो नयी कविता के नयी कही जाने का लक्षण कहा जाता है। सामान्य रूप में नवता तो परम्परित अर्थ में ग्रहण की जाती रही किन्तु प्रस्तुत शोध प्रबंध में उस नयी के परम्परित और अद्यतन अर्थ को एकीकृत करते हुए लेखिका ने अज्ञेय के कथन का सहारा लिया है जिसमें यह कहा गया है कि प्रयोग मात्र प्रयोग न होकर, सर्जना का दूसरा नाम है। इसमें अनुकरण तथा विदेशी प्रभावों को नकारते हुए रचनाकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आज की कविता युग की विसंगतियों, विडम्बनाओं तथा आत्मसंघर्षरत आमजन की वह अनुभूति है जो अभिव्यक्त होकर रिझाती चाहे न हो किन्तु खिझाती अवश्य है।

शोध प्रबंध में शोधार्थिनी ने समकालीन वादगत (प्रयोग, नयी कविता, साठोत्तरी) काव्य को ऐसे नवीन प्रतिमानों द्वारा परखने का प्रयास किया है जो काव्यरूप में चाहे वही हो किन्तु अज्ञेय जैसे पुराने शब्दों में नया अर्थ भरते हैं वैसे ही डॉ0 रेनू दीक्षित ने परम्परित प्रतिमानों के आधार पर नये प्रतिमानों का भी अनुशीलनपरक विवेचन किया है। इसीलिए प्रस्तुत शोधकृति विभिन्न समस्याओं का समाधान होने के साथ-साथ प्रयोगवाद और नयी कविता के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी बन गयी है। कुल मिलाकर इस शोधकृति की उपादेयता छायावादोत्तर हिन्दी कविता के लिए विशेष रूप से ग्राह्य और ध्यातव्य है।

शोध विषय- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता : रूप और शिल्प
पर्यवेक्षक- डॉ0 मोहन अवस्थी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उपाधि वर्ष- 1985,
प्रकाशन दो खण्डों में-
नई कविता का रूप, सरस्वती प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर, मूल्य : 400/-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

नई कविता का सौन्दर्यबोध, सरस्वती प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर
मूल्य : 550/-

उदात्त तत्त्वों के आधार पर नयी कविता की परख

डॉ कुमार दिनेश 'प्रियमन'

ज्ञान के बजाय सूचना विस्फोट के इस युग में जब हमारे विश्वविद्यालयों के ज्यादातर शोध प्रबन्ध एकत्रित सूचनाओं का संकलन भर होते हैं, डॉ0 राकेश शुक्ल का प्रकाशित शोध प्रबन्ध 'नयी कविता में उदात्त तत्व' एक सुखद सम्भावना की तरह हमारे सामने हैं। विश्व काव्य परम्परा में औदात्य की सहित्यैतिहासिकता को हिन्दी की नयी काव्यधारा से जोड़कर विषय की विवेचना ने डॉ0 राकेश की कृति को पठनीय बना दिया है।

अरस्तू के बाद लौंजाइनस पाश्चात्य काव्य सिद्वान्तकार के रूप में विश्व विख्यात हैं। 'पेरिइप्सुस' ग्रन्थ में उन्होने पहली बार साहित्य में उदात्त तत्व की महत्ता को स्थापित किया। 'औदात्य महान आत्मा की सच्ची प्रतिध्वनि है।' कहकर लौंजाइनस ने उदात्त तत्व की मानक भूमिका रेखांकित की है। डॉ0 राकेश की इस शोध कृति में उदात्त तत्व पर भारतीय काव्य सिद्वान्तकारों सहित लगभग सभी उल्लेखनीय पाश्चात्य कवि व समीक्षकों की मान्यताओं पर संक्षिप्त किन्तु पठनीय टिप्पणियाँ हैं। कृति के सम्बन्ध में विद्वान साहित्यकार डॉ0 कुमार विमल ने लिखा है कि, ''जहाँ तक मेरी जानकारी है, नयी कविता में उदात्त तत्त्व पर ऐसा स्वतंत्र, सुव्यवस्थित और विश्लेषणात्मक शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रकार यह शोध प्रबन्ध अध्येतव्य विषय पर इत:पूर्व उपलब्ध ज्ञान की परिधि का विस्तार करता है।''

समीक्षा कृति के प्रथम अध्याय में उदात्त तत्त्व का सैद्वान्तिक विवेचन किया गया है और उदात्त काव्य के प्रयोजन को विनिर्दिष्ट किया गया है। द्वितीय अधयाय में उदात्त के शास्त्रीय विवेचन और विकास को निरूपित करते हुए डॉ0 राकेश ने प्राच्य काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र, दोनों को दृष्टिपथ में रखा है। तृतीय अधयाय 'हिन्दी काव्य परम्परा में उदात्त तत्व' के अन्तर्गत वैदिक वाङमय से लेकर आधुनिक हिन्दी काव्य तक उदात्त के रचनाकारों एवं कृतियों की संक्षेप में परख की गयी है। जिससे हिन्दी काव्य में औदात्य की ऐतिहासिक भूमिका का भी पता चलता है। उक्त तीन अध्यायों में डॉ0 राकेश ने उदात्त के तात्विक, सैद्वान्तिक एवं ऐतिहासिक आधार निर्दिष्ट कर लिए हैं।

कृति के मूल विषय तथा चतुर्थ अध्याय 'नयी कविता में उदात्त तत्त्व' विशेष रूप से पठनीय है। प्रयोगवाद के गर्भ से नयी कविता के अद्यतन विकास और उसकी विभिन्न काव्यधाराओं का प्रतिनिधि कवियों के उद्धरणों सहित अध्ययन, अनुशीलन साहित्य के पाठकों, विशेषकर शोध-छात्रों के लिए उपयोगी है। इस अध्ययन में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता और धर्मवीर भारती की कविताओं को मुख्यत: दृष्टिपथ में रखा गया है। कृति के पाँचवें अध्याय में, नयी कविता के विविध काव्यान्दोलनों के परिप्रेक्ष्य में उदात्त की सीमाओं और उसकी सम्भावनाओं को तलाशा गया है। विशेष बात यह है कि इस अध्याय में शाश्वत एवं समकालीन जीवन मूल्यों की अवधारणा और उसके निष्कर्ष के परिप्रेक्ष्य में नयी कविता की रक्षा की गयी है। शोध कृति की यह विशेषता भी है कि इसके छठे अध्याय में उदात्त की दृष्टि से नवगीत का मूल्यांकन भी किया गया है। जो एक सराहनीय पक्ष है क्योंकि प्राय: नयी कविता या समकालीन कविता से नवगीत को बहिष्कृत सा कर दिया गया है।

इस शोध-समीक्षा कृति का सातवाँ अध्याय और भी महत्त्वपूर्ण है। इस अध्याय में नयी कविता की लम्बी कविताएँ या प्रबन्ध कृतियाँ, जो उदात्त की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं, का अलग से विश्लेषण किया गया है। इन लम्बी कविताओं एवं प्रबन्ध रचनाओं में 'असाध्यवीणा'-अज्ञेय, 'अंधेरे में'-मुक्तिबोध, 'अंधा युग'-धर्मवीर भारती, 'आत्मजयी'-कुंवर नारायण, 'संशय की एक रात'-नरेश मेहता, तथा 'एक कण्ठ विषपायी'-दुष्यन्त कुमार जैसी उत्कृष्ट काव्य कृतियाँ हैं, जो नयी कविता की मानक कृतियाँ मानी जाती हैं। ग्रन्थ के आठवें तथा आखिरी अध्याय में डॉ0 राकेश ने अपने अनुसंधान कार्य का उपसंहार करते हुए इस शोध प्रबन्ध के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। आवश्यक सन्दर्भ ग्रन्थों से प्राप्त सामग्री का कुशल उपयोग, संतुलित शोध व

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

समीक्षा दृष्टि, पूर्वग्रह मुक्त स्वतंत्र व सुव्यवस्थित विवेचना इस शोधकृति की विशिष्टता है, किन्तु पर्याप्त संदर्भों के बावजूद अस्तित्ववादी चिन्तन के अन्तर्गत विचारक, लेखकर ज्यॉ पाल सात्र का उल्लेख तक न होना व नयी कविता पर महत्त्वपूर्ण आलोचक डॉ0 राम विलास शर्मा की प्रसिद्व पुस्तक 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' का शामिल न होना अखरता है। नयी कविता की कतिपय उल्लेखनीय महिला रचनाकारों को अलग से न सही, विवेचना में ही प्रतिनिधिक महत्त्व मिलना अपेक्षित था।

समीक्षा कृति की सम्बन्ध में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो0 राजेन्द्र कुमार वर्मा ने अपनी सम्मति में लिखा है कि, ''अनुसंधाता ने नयी कविता में व्याप्त उदात्त तत्व की सैद्वान्तिक चर्चा करते हुए उसके विशिष्ट कवियों के काव्य की व्यावहारिक समीक्षा प्रस्तुत की है, जो उपयुक्त एवं सार्थक है।'' इसी प्रकार सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्या नगर, गुजरात के पूर्व हिन्दी विभागाधयक्ष प्रो0 महावीर सिंह चौहान ने लिखा है कि, ''प्रस्तुत समीक्षा कृति समीक्षक के गम्भीर अध्ययन और संतुलित समीक्षा दृष्टि से परिचित कराता है तथा यह कृति नयी कविता के अध्ययन के संदर्भ में समीक्षक का मौलिक योगदान है। कुल मिलाकर नयी कविता के लगभग अनछुये पहलुओं की दृष्टि से इस कृति को पढ़ना सुखद भी है और आवश्यक भी।

शोध विषय - ''नयी कविता में उदात्त तत्त्व''

पर्यवेक्षक- डॉ0 सुरेन्द्र प्रसाद तिवारी, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, उपाधि वर्ष-1996,

नयी कविता में उदात्त तत्त्व, आशीष प्रकाशन पी.रोड. कानपुर

आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि संस्कृति के तत्त्व

- डॉ० राकेश शुक्ल

मध्य युग तक सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था का मूलाधार कृषि ही हुआ करती थी। आधुनिक काल में वैज्ञानिक उन्नति तथा औद्योगीकरण के चलते अर्थव्यवस्था के दूसरे बड़े आधार प्राप्त हुये। यद्यपि उद्योग और वाणिज्य (व्यवसाय) भी कृषि उत्पादन तथा भूगर्भ स्रोत खनिज पर्दार्थों आदि पर ही आधारित होते हैं। अस्तु कृषि आज भी जहाँ एक ओर अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था का मूलाधार है। वहीं दूसरी ओर उन देशों को सांस्कृतिक जीवन भी कृषि ने ही प्रदान किया। कृषि संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति की तो परिकल्पना तक नहीं की जा सकती है।

डॉ0 गायत्री सिंह की शोध कृति 'आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि संस्कृति' हिन्दी शोध-समीक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति है। इस कृति का फलक अत्यन्त विस्तृत है। विषय नितान्त नूतन और मौलिक है जिस पर पूर्व में प्रकाशित अथवा अप्रकाशित शोध कार्य देखने में नहीं आया। जहाँ तक कृषि संस्कृति से कविता का सम्बन्ध हैं, कृषि प्राकृतिक सम्पदा, वन, झरने, झील, सरिता, पर्वत, पठार, रेगिस्तान तथा सागर आदि के साथ कवियों का रिश्ता बहुत पुराना है। हमारा लोकसाहित्य कृषि और प्राकृतिक सम्पदाओं के वर्णनों से भरा पड़ा है। हिन्दी कवियों ने खेत की जुताई से लेकर पकी सुनहरी बालियों तक के वर्णन में ढेर सारा काव्य लिखा है। भारतीय भाषाओं के लोकगीतों में जुताई, बुआई, निराई, मड़ाई, धान रोपाई, गन्ने की पेराई से लेकर धन-धान्य की समृद्धि तक के बड़े मनोहारी वर्णन देखने को मिलते हैं। इन वर्णनों के अतिरिक्त कवियों का ध्यान ग्राम्य जनजीवन की अभिव्यक्ति विशेषत: किसानों की दशा पर भी गया है।

इस समीक्षा कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विदुषी समीक्षक ने आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि प्रधान सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनजीवन की अभिव्यक्ति को अत्यन्त गवेषणा के साथ सोदाहरण विवेचित किया है। समीक्षा कृति के प्रारम्भ में कृषि संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य का विवेचन करते हुये साहित्य में कृषि सांस्कृतिक मूल्यों की परख की गई है। ततपश्चात आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि तत्वों का विवेचन इस कृति को मूल्यवान बनाता है।

आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि प्रधान आर्थिक जनजीवन की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत डॉ0 गायत्री सिंह ने

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

अधिकांश आधुनिक कवियों की रचनायें उद्धृत कर यह स्पष्ट किया है कि स्वाधीनता के पश्चात् कृषि के क्षेत्र में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये हैं। कृषि में वैज्ञानीकरण और हरित क्रान्ति के बाद हम आत्मनिर्भर ही नहीं हुये वरन् उत्पादन के अन्य क्षेत्र में बड़े निर्यातक भी बने। बावजूद इसके बड़े किसानों को छोड़कर साधारण किसान आज भी गरीब हैं। उसे मौसम पर निर्भर रहना पड़ता है। वह अपने उत्पाद के प्रति निश्चिन्त नहीं रह पाता। आज भी वह जितना परिश्रम करता है उसका प्रतिफल उसे नहीं मिल पाता। साधारण किसान आज भी प्रेमचंद के कथापात्र 'होरी' की तरह कर्ज में डूबा है।

डॉ0 गायत्री सिंह ने इस कृति में आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि प्रधान सामाजिक जन-जीवन की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत यह सिद्व किया है कि भारतीय संस्कृति का मरूदण्ड ग्राम ही हैं इसीलिये इक्कीसवीं शताब्दी में भी भारत ग्राम संस्कृति और परिवेश का चित्रण है। भारत कृषि प्रधान देश हैं भारतीय कृषक समाज के वातावरण, परिवार का स्वरूप, पारिवारिक संस्कृति, रीति रिवाज, मान्यतायें आर्थिक दशा, जनतांत्रिक व्यवस्था, धार्मिक एवं दार्शनिक विचाराधारा, यहाँ तक कि खान-पान, पहनावा, उपभोग की वस्तुओं और मनोरंजन के साधनों पर आधुनिक कवियों ने किस प्रकार लेखनी चलाई है, लेखिका ने इसे नये नजरिये से परखने का प्रयत्न किया है।

आधुनिक जटिल और संश्लिष्ट जीवन में जबकि नगरीय और महानगरीय परिवेश पर अधिक कवितायें लिखी जा रही हैं उनमें कृषि और प्रकृति चित्रण के लिये कोई स्थान नहीं बचता। बावजूद इसके, ग्रामीण परिवेश, कृषि सम्पदा, वन सम्पदा, प्रकृति और वनस्पतियों के साथ पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित काव्य का गहन अनुशीलन इस समीक्षा कृति की बड़ी विशेषता है। इसी प्रकार लोक संस्कृति की उपेक्षा के इस काल में कृषि प्रधान सांस्कृतिक जनजीवन की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत भारतीय लोक संस्कृति, लोकगीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथा, लोक रंजन और लोक विश्वास से सम्बन्धित कविताओं का मूल्यांकन इस समीक्षा कृति की अन्यतम उपलब्धि है। कृति में डॉ0 गायत्री सिंह ने जो परिश्रम किया है वह मूल्यवान तथा उपयोगी है।

शोध विषय-''आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि सांस्कृतिक मूल्य''
पर्यवेक्षक- डॉ0 विद्या चौहान
कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, उपाधि वर्ष- 1987
आधुनिक हिन्दी कविता में कृषि संस्कृति, साहित्य निलय प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर, मूल्य : 600/-

शैली वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कामायनी का अनुशीलन

डॉ० राकेश शुक्ल
रीडर, हिन्दी विभाग
वी० एस० एस० डी० कालेज
कानपुर

SHODH SANCHAYAN

शैली अभिव्यक्ति का एक प्रकार है, जिसके द्वारा हम किसी कृति के आन्तरिक स्वरूप का पता लगा सकते हैं। यह एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अत: किसी कृति के शब्द विन्यास, भाषा, गुण, वृत्तियाँ, अलंकार, छन्द, मिथक, बिम्ब और पद रचना की दृष्टि से उसका अध्ययन शैली विज्ञान के अन्तर्गत आता है। इन उपकरणों के आधाार पर किसी रचनाकार की अपनी एक विशिष्ट शैली विनिर्मित हो जाती है, इस शैली के आधार पर ही हम किसी कवि या लेखक की रचना को ध्यानपूर्वक पढ़कर यह पता लगा सकते हैं कि यह किस कवि या लेखक की रचना है।

'कामायनी का शैली विज्ञान' डॉ0 कृष्णकान्ति का एक ऐसा ही शोध-समीक्षा ग्रन्थ है जिसके माध्यम से विदुषी लेखिका ने महाकवि जयशंकर प्रसाद एवं उनकी कालजयी कृति कामायनी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन किया है। समीक्षा कृति के पहले अध्याय 'शैली विज्ञान' में लेखिका ने शैली की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला है। इसी अध्याय में शैली के भेदोपभेदों का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

उल्लेख करते हुए उसकी वैज्ञानिक अवधारणा को भी स्पष्ट किया गया है। दूसरे अध्याय 'काव्य भाषा' के अन्तर्गत भाषा और सर्जनात्मक भाषा के अन्तर को स्पष्ट करते हुए काव्यभाषा तथा कामायनी की भाषा पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। कामानयी में बिम्ब विधान, प्रतीक विधान, धवन्यात्मकता, चित्रोपमता आदि को रेखांकित करते हुए लेखिका ने कामायनी के शैली वैज्ञानिक अध्ययन की पृष्ठभूमि सुनिश्चित कर ली है।

अपने मूल प्रतिपाद्य का विस्तार के साथ विश्लेषण करते हुए समीक्षक ने उदाहरणार्थ यह सिद्ध किया है कि प्रसाद ने कामायनी में किस प्रकार शब्द चयन, धवनि चयन तथा छन्द चयन किया है। यह सच है कि कोई भी महान रचनाकार अपने सृजन के क्षणो में बहुत तकनीकी जानकारी को रखकर रचना नहीं करता, न ही वह काव्यशास्त्र के मानदण्डों या भाषा विज्ञान/व्याकरण शास्त्र की पोथियों को सामने रखकर सृजनरत होता है। किसी महान रचनाकार की सहज प्रतिभा ही उसे महान रचनाकार बनाती है। एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट है कि विदुषी लेखिका ने प्रसाद की कामायनी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन अत्यन्त तर्कपूर्ण प्रमाणों एवं सूक्ष्म अन्वेषण के साथ किया है जिससे इस शोधग्रन्थ की मौलिकता का पता चलता है।

''देख लो ऊँचें शिखर का ब्योम चुम्बन व्यस्त।''

(कामायनी, संघर्ष सर्ग)

हिन्दी में ब्योम अर्थ में आकाश, गगन आदि कई शब्द हैं, कोई सामान्य कवि होता तो अनुप्रासिक सौन्दर्य के लोभ में 'चुम्बन' के समानान्तर 'गगन' रख देता, जो छन्द की दृष्टि से भी ठीक होता। ''देख लो ऊँचें शिखर का गगन चुम्बन व्यस्त'' किन्तु यहाँ पर्वत का उच्च शिखर आकाश का चुम्बन कर रहा है ''गगन' में तो दोनो स्वर 'अ' है, जो अर्थ विवृत होने से ऊँचाई का श्रवण प्रभाव नहीं दे पाते। 'गगन' की तुलना में 'व्योम' में 'ओ' अर्थ संवृत होने के कारण स्पष्ट रूप से अपने उच्चारण द्वारा ऊँचाई का प्रभाव उत्पन्न कर रहा है।''

(कामायनी का शैली विज्ञान)

लेखिका ने 'विचलन' और 'संयोजन' शीर्षक अध्यायों में कामायनी का भाषावैज्ञानिक अध्ययन भी किया है। इसके अन्तर्गत विशेषण विचलन, संवृति विचलन, कारक विचलन, पुरूष विचलन, मानक विचलन आदि व्याकरणिक संरचना के आधाार पर कामायनी का मूल्यांकन किया गया है। इसी प्रकार संयोजन के अन्तर्गत वर्ण संयोजन, गुण संयोजन, वृत्ति संयोजन, पद संयोजन, वाक्य संयोजन, सहित लिंग एवं कारकों के विशिष्ट प्रयोग के आधार पर कामायनी की श्रेष्ठता या उत्कृष्टता की परख की गई है। शब्द शक्तियों के आधार पर भाषा में अर्थ के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डॉ0 कृष्णकान्ति ने विस्तार के साथ कामायनी की काव्य-भाषा का मूल्यांकन किया है। लेखिका ने काव्य शास्त्र के अनेक ग्रन्थों यथा -'ध्वयन्यालोक' और 'काव्य दर्पण' के आधार पर तथा भाषा विज्ञान की कसौटी पर भी कामायनी को रखने का कार्य किया है। 'अंलकृति' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत कामायनी में अभिव्यंजनात्मक सौन्दर्य का उद्घाटन करते हुए लेखिका इस निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि, ''कामायनी में अकृत्रिम रूप से प्रयुक्त होने के कारण जहाँ अलंकार पाठक को चमत्कृत करते हैं वही रस चवर्णा में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।''

साहित्य समाज की चेतना का स्पन्दन है, इस दृष्टि से कालजयी महाकाव्यों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ऐसे महाकाव्यों में मिथकों का भी बड़ा महत्त्व है, जो संस्कृति की अन्त:सलिला हैं। कामायनी के मिथकों पर व्यवस्थित और सुविचारित अध्ययन से इस समीक्षाकृति का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। कामायनी की छन्द योजना एवं सम्प्रेषणीयता पर भी लेखिका ने विस्तृत अध्ययन किया है। यति, गति, तुक, शब्द योजना, शास्त्रीय मिश्रित तथा स्वनिर्मित छन्दों के आधार पर कामायनी के छन्द विधान का मूल्यांकन भी इस ग्रन्थ को मूल्यवान बनाता है। निष्कर्षत: शैली विज्ञान की दृष्टि से भी कामायनी एक कालजयी ग्रन्थ है। इस शोध-समीक्षा कृति के अध्ययन से न केवल किसी कृति के शैलीवैज्ञानिक अध्ययन की उपयोगिता को समझने में सहायता मिलती है वरन् कामायनी की उन असंख्य विशिष्टताओं के बारे में हमें जानकारी होती है, जिनके बारे में हमने कभी विचार ही नहीं किया। यह पुस्तक शोधार्थियों, विद्यार्थियों के साथ ही साथ काव्यप्रेमी सहृदय पाठकों के लिए भी उपयोगी है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

पुस्तक - कामायनी का शैली विज्ञान
लेखिका - डॉ0 कृष्णकान्ति दीक्षित
प्रकाश - ग्रन्थम, 38/17-ए, मेस्टन रोड, कानपुर
मूल्य - रू0 250/-

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य पर एक सार्थक शोध

डॉ० राकेश शुक्ल
रीडर, हिन्दी विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

आज जबकि साहित्य की सामाजिक उपयोगिता पर निरन्तर प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं, कहानी विधा की लोकप्रियता में बहुत अन्तर नहीं आया है और उसने क्रमशः कविता को हाशिए पर डाल कर स्वयं को केन्द्रीय भूमिका में स्थापित कर लिया है। स्वभाविक है कि ऐसे में कथा साहित्य का सृजन भी प्रचूर परिमाण में हो रहा है और उस पर शोध भी पर्याप्त हो रहे हैं।

नयी कहानी आन्दोलन के दौरान जिन महिला कथाकारों के सृजन से हिन्दी कथा साहित्य समृद्ध हो रहा था, उनमें मन्नू भण्डारी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अतः शोधकर्त्ताओं व समीक्षकों की दृष्टि से वे भला अनालोचित कैसे रह जातीं। जहाँ एक ओर हिन्दी कथा साहित्य तथा महिला कथा सहित्य पर अनेक शोध समीक्षा ग्रन्थों में मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मूल्यांकन किया गया है, वहीं उनके कथा-साहित्य पर स्वतंत्र रूप से भी शोध कार्य हुए हैं। किन्तु उनके कथा साहित्य में पारिवारिक जीवन की समस्याओं को आधार बनाकर प्रामाणिक शोध प्रकाशित ग्रन्थ के रूप में पहली बार देखने में आया है, जिसे डॉ0 बीना रानी गुप्ता ने अध्यवसायपूर्वक सम्पन्न किया है।

मन्नू भण्डारी के चर्चित उपन्यासों 'एक इंच मुस्कान' 'आपका बंटी', 'महाभोज' तथा 'स्वामी' एवं सात कहानी संग्रहों के आधार पर उनके कथा साहित्य में पारिवारिक जीवन की समस्याओं का तथ्यपरक, वस्तुपरक, वैज्ञानिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन ही समीक्षक का उद्देश्य है। वस्तुतः मन्नू के कथा साहित्य में परिवारिक जीवन की समस्याओं का जैसा जीवंत आख्यान मिलता है, वैसा अन्यत्र नहीं। इन समस्याओं के केन्द्र में खासा स्त्री-विमर्श भी हुआ है, किन्तु वह स्त्री विमर्श किसी नारेबाजी या आन्दोलन के तहत नहीं वरन् स्त्रियों को अपनी अस्मिता को बचाये या बनाए रखने की जद्दोजहद या छटपटाहट में है।

समीक्ष्य कृति को बारह अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम अध्याय 'कथा साहित्य में परिवारों की की संरचना' के अन्तर्गत परिवारों का संरचनात्मक स्तर पर वर्गीकरण करते हुए उनकी विशेषताओं एवं समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। संयुक्त, परिवार, एकल परिवार तथा उनमें पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों की स्थिति व उनकी समस्याओं को भी रेखांकित किया गया है। इस अध्याय में डॉ0 बीना ने जहाँ एक ओर अपने शोध कार्य के मानदण्डों को सुनिश्चित कर लिया है, वहीं दूसरी ओर मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में उक्त प्रकार के पारिवारिक जीवन की समस्याओं का उल्लेख करते हुए उसका शोधपरक विवेचन, विश्लेषण भी किया है।

प्रत्येक सजग साहित्यकार ने अपने समय को राजनैतिक व्यवस्था और उसकी विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी की कहानियों में भी अपने समय की राजनैतिक व्यवस्था, लोकतंत्र से मोहभंग, नौकरशाहों की भूमिका तथा सत्ता के शीर्ष पर बैठे राजनीतिज्ञों की स्वार्थपरता के साथ न्यायपालिका की विडम्बना पूर्ण कार्य प्रणाली को लेकर सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन है। इन समस्त स्थितियों, परिस्थितियों के आलोक में मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य का मूल्यांकन डॉ0 बीना ने विस्तार के साथ किया है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में जीवन मूल्यों की दृष्टि से उत्पन्न समस्याओं का वर्णन भी प्रचुर परिमाण में मिलता है। वस्तुतः एक ही कालखण्ड में किसी समाज में संस्कृति के कई आवर्त हाते हैं। एक ही समय में आदिवासी समाज से लेकर उत्तरआधुनिक समाजों का अस्तित्व होता है। अतः जीवन मूल्यों की दृष्टि से इन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

शोध प्रकाशन : पुस्तक समीक्षा

www.shodh.net

सबका मूल्यांकन एक समान नहीं किया जा सकता है। मन्नू भंडारी की कहानियों में नगरीय, महानगरीय समाज के साथ ग्रामीण एवं झोपड़पट्टी (स्लम) समाजों की पारिवारिक समस्याओं का चित्रण भी मिलता है। अत: जीवन मूल्यों के आधार पर इन समाजों के परिवारों पर आधृत कहानियों का मूल्यांकन शोधकर्त्री ने बहुत ही तथ्यपरक ढंग से किया है।

समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों पर लगभग प्रत्येक समकालीन रचनाकार ने अपनी लेखनी चलाई है। अर्थ(सम्पत्ति) तथा व्यवसाय के आधार पर परिवारों की समस्याओं, पूँजी के बढ़ते वर्चस्व, मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा तथा आम आदमी के शोषण, मँहगाई, बेरोजगारी, उदारीकरण, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के संजाल तथा बाजारवाद से उत्पन्न अनेक आर्थिक समस्याओं को केन्द्रित कर लिखी गई कहानियों के आधार पर डॉ0 बीना ने मन्नू भंडारी की कहानियों एवं उपन्यासों में आर्थिक या व्यवसाय के आधार पर परिवारों की समस्याओं का विश्लेषण किया है।

मनोविज्ञान की पीठिका पर यदि समकालीन कहानी का मूल्यांकन न हो तो उसका मूल्यांकन अधूरा ही माना जाएगा मनोवैज्ञानिक चिन्तन की दृष्टि से मन्नू भंडारी के कथा सहित्य का महत्व असंदिग्ध है। वस्तुत: आधुनिक समाज के अति बौद्विक वर्ग की मनोरचना में अस्तित्ववादी चिन्तन के साथ ही साथ परिवेश जन्य अहं की भावना, अन्तर्द्वन्द्व, संत्रास, घुटन, निरर्थकता का बोध तथा अजनजीवन की भावना ने अपनी पैठ बना ली है। मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में ऐसी मन: स्थितियों से ग्रस्त व्यक्तियों तथा परिवारों की समस्याओं का यथार्थ चित्रण है अत: ऐसे पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अधययन भी डॉ0 बीना रानी ने किया है। इसी प्रकार मन्नू के कथा सहित्य में प्रेम, प्रेम विवाह तथा दाम्पत्य सम्बन्धी अनेक समस्याओं को लेकर भी शोधाकर्त्री का विवेचन, विश्लेषण महत्वपूर्ण है। ग्रन्थ के अन्त में लेखिका द्वारा मन्नू भंडारी का लिया गया साक्षात्कार इस कृति की विशेष उपलब्धि है।

पुस्तक - मन्नू भंडारी का कथा सहित्य : पारिवारिक जीवन की समस्याएं
लेखिका - डॉ0 बीना रानी गुप्ता
प्रकाशक - संभावना प्रकाशन, हापुड़
मूल्य - रू0 350/-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN